लाला रामदेव का धंधा न कभी पड़ा मंदा

-वाई.के. रज्जन

ठग गुरु लाला रामदेव की दुकान चल निकली है। भ्रष्ट नेता और बेईमान अफसरों, बिल्डरों व बैंक का कर्ज लेकर डकारने वाले पूंजीपतियों की कृपा से रामदेव भारतीय राजनीतिक इतिहास का सबसे धूर्त और मक्कार बिजनेसमैन बनकर उभरा है।

योग या कोई भी शारीरिक क्रिया अगर शरीर को चुस्त रखने के लिए की जाए जो उसे करने में कोई परहेज भी नहीं है। अगर योग को हिंदू संस्कृति को फैलाने का माध्यम और किसी लाला की दुकान को चमकाने का फॉरमूला मान लिया जाए तो उस पर समाज के आम लोगों की आपत्ति जरूर होगी।

फरीदाबाद में चार दिन तक योग दिवस का नाटक चला। लेकिन दिल्ली में राजपथ पर और चंडीगढ़ में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में एक-एक दिन का योग कार्यक्रम चला। इसके अलावा केंद्र व राज्यों के सीएम व मंत्रियों ने अलग-अलग स्थानों पर फर्जी अनुलोम-विलोम किया।

अगर केंद्र सरकार के आंकड़ों पर यकीन किया जाए तो सरकार के तहत काम करने वाले केंद्रीय आयुष मंत्रालय ने 20 करोड़ रुपये योग दिवस पर खर्च किए। पिछले साल इसी मंत्रालय ने 32 करोड़ रुपये खर्च किए थे। चंडीगढ़ में प्रधानमंत्री के योग कार्यक्रम पर इस साल 15 करोड़ रुपये खर्च किए गए। यह सरकारी आंकड़ा है।

सरकार के मुताबिक चंडीगढ़ में प्रधानमंत्री के साथ 30 हजार लोगों ने योगासन किया। इनमें 10 हजार लोग अकेले चंडीगढ़ के थे। बाकी 20 हजार लोग हरियाणा और पंजाब के सीमावर्ती जिलों से 600 बसों में ढोकर लाए गए थे। 20 लड़कियां फ़रीदाबाद से भी ले जाई गई थी। ट्रेनों में भी काफी लोगों ने बेटिकट यात्रा की, रेल मंत्री सुरेश प्रभु के टीटी ट्रेनों से नदारद थे। चंडीगढ़ में योग वाली जगह पर 300 बॉयो टायलेट बनाए गए थे और .योग करने के लिए 30 हजार मैट खरीदी गई थी। चंडीगढ़ पुलिस के तीन हजार जवानों के अलावा चार हजार अर्ध सैनिक बल तैनात किए गए थे। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि अकेले चंडीगढ़ में योग दिवस पर कितना खर्च हुआ होगा। इसके मद्देनजर आयुष मंत्रालय का चंडीगढ़ में 15 करोड़ खर्च करने का दावा फर्जी है।

फरीदाबाद में जहां लाला रामदेव खुद मौजूद था, वहां हरियाणा सरकार ने एक अनुमान के मुताबिक 5 करोड़ रुपये खर्च किए। हालांकि इसमें पुलिस वालों, नगर निगम और अन्य विभागों के कर्मचारियों ने वहां रात-दिन जो सेवा की, उसका खर्च शामिल नहीं है। अगर कोई आम आदमी पुलिस की सुरक्षा मांगती है तो सरकार उस व्यक्ति से पुलिस वालों की ड्यूटी के बदले पैसे लेती है। लेकिन फरीदाबाद में चूंकि मोदी सरकार को चलाने वाले नंबर 2 शख्सियत अमित शाह, नितिन गडकरी और खुद मुख्यमंत्री को आना था तो इस नाम पर हर थाने की पुलिस को योग स्थल पर ठेल दिया गया था। बहुत सीधा सा सवाल है जो बीजेपी नेताओं, इनके सांसदों व विधायकों से पूछा जाना चाहिए...कि क्या उन्होंने अपनी सरकार से इस बात का हिसाब मांगा कि जितने पैसे योग दिवस पर लुटाए गए, उतने पैसे में किसी गांव में या शहर की तमाम झुग्गी बस्तियों में पानी, सड़क और बिजली का इंतजाम हो जाता। उनमें स्कूल खुल जाते। डिस्पेंसरी खुल जाती। लेकिन इन नेताओं, सांसदों व विधायकों में जरा भी ऐसा सवाल उठाने की हिम्मत नहीं है। इन खद्दरधारियों को नहर के इस पार या उस पार गांवों को जाने वाली सड़कें नहीं दिखाई देतीं जो बंसीलाल के जमाने में बनने के बाद आज भी फिर से बनाए जाने का इंतजार कर रही हैं। जिन सड़कों पर गांवों से आने-जाने वालों को न जाने कितनी तकलीफ से गुजरना पड़ता है। जिन गांवों में सरकारी डिस्पेंसरी तक नहीं है कि लोग वहां से बुखार जैसी मामूली बीमारी की दवाई ले लें।

अगर फरीदाबाद या देश के किसी भी जिले में लोगों के पेट खाली हैं, शरीर पर ढंग के कपड़े नहीं हैं, बेरोजगारी है, गरीबी है, क्या वहां एक ठग गुरू की दुकान चमकाने के लिए इतने बड़े स्तर का आयोजन सरकारी पैसे से होना चाहिए? राजपथ और मोदी के चंडीगढ़ वाले कार्यक्रम में योग के लिए जो मैट बिछाई गई, एक मैट की कीमत हजारों रुपयों में थी। सरकारी आंकड़े के मुताबिक पिछले साल आयुष मंत्रालय ने राजपथ पर योग दिवस के लिए एक मैट खरीदने पर 90 हजार रुपये खर्च किए थे। पिछले साल भी हमने इसी तरह आलोचना की थी तो इस बारे मंत्रालय ने पहले से ही घोषित कर दिया था कि इस बार मैट सस्ती खरीदी गई है। लेकिन कमीशन के खेल में बेईमान अफसर अपना मुनाफा कहां छोड़ते हैं। एक सीनियर आईएएस अफसर ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि जब लाला रामदेव लोगों को मूर्ख बना रहा है तो हम क्यों पीछे रहें। क्या हमारे बाल-बच्चे नहीं हैं। हमें भी उनके लिए इंतजाम करना है, योग से उनका पेट तो नहीं भरेगा न उनको नौकरी मिलेगी। जब हम उन्हें महंगे स्कूलों में पढ़ाएंगे तभी वो भी हमारी तरह आईएएस-आईपीएस बनेंगे। वरना किसी ठग गुरु के भरोसे रहे तो गरीब का बेटा गरीब ही रहेगा।

उस आईएएस अफसर ने सवाल किया कि जब लाला रामदेव किसी भी शहर में जाता है तो वह किसी फैक्ट्री मालिक, किसी बिल्डर, किसी सेठ का ही मेहमान क्यों बनता। वह कभी किसी गांव में किसी किसान या झुग्गी बस्ती में किसी गरीब मजदूर के घर में मेहमान बना है...कभी नहीं बना। चूंकि सफेदपोश कालेधन को सफेद इसी ठग के जरिए करता है तो दोनों मिलबांट कर खा-कमा रहे हैं। उसने पूछा पतंजलि स्टोर की कोई दुकान आपने किसी गांव या झुग्गी बस्ती में देखी...लाला की ये दुकान आपको शहर के संभ्रांत इलाकों में मिलेगी, जहां लोग ज्यादा पैसा होने के कारण अक्सर बीमार रहते हैं या ज्यादा पैसा कमाने की होड़ में रहते हैं और बीमार पड़ जाते हैं। अगर सिर्फ फरीदाबाद शहर की बात की जाए तो क्या एसी नगर, बाबा नगर, राजीव कालोनी, पर्वतीय कालोनी, नंगला, मुजेसर जैसे इलाकों में जहां गरीब मजदूर रहते हैं, वहां पतंजलि स्टोर है...एक भी नहीं। अगर ये लाला हिंदुओं का इतना हमदर्द है तो इसे चाहिए कि कम से कम अपने ही समुदाय के गरीबों को पतंजलि की दवाइयां मुफ्त में बांटे या आधे दामों पर बेचे।

मोदी ने इस बार सूर्य नमस्कार पर एक डाक टिकट भी जारी किया। सूर्य नमस्कार योग करने वाले से यह कहकर कराया जाता है कि इसे करना जरूरी है, तभी योग पूरा होगा। दरअसल, सूर्य नमस्कार का पेंच राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ (आरएसएस) ने डाला है। इसके जरिए वह हिंदुत्व का प्रचार करने का सपना देख रहा है। खास बात ये है कि किसी शंकराचार्य ने संघ वालों से नहीं कहा है कि आप लोग हिंदूत्व का प्रचार करें। लेकिन ये लोग जबरन लगे हुए हैं।

भारत के लोगों का पीछा इन फर्जी बाबाओं से छूट नहीं रहा है। कुछ बाबा तो जेल में हैं लेकिन कुछ को मोदी सरकार ने खुला छोड़ रखा है, जिससे वो जनता को बेवकूफ बनाएं और पूंजीपतियों का कालाधन सफेद करें। पिछले दिनों दिल्ली में यमुना के किनारे ऐसे ही एक फर्जी बाबा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के नाम पर प्रधानमंत्री को बुलाया और पूरी यमुना को बर्बाद कर डाला। नैशनल ग्रीन ट्रिब्यूनल ने इस पर काफी शोर मचाया और जुर्माना लगाया लेकिन वो फर्जी बाबा जुर्माना भरने को तैयार नहीं हुआ। ट्रिब्यूनल ने जब सख्ती की तो कार्यक्रम के छह महीने बाद जुर्माने की रकम जमा कराई। उस फर्जी बाबा ने उस कार्यक्रम में मोदी को भी बुलाया था। कुल मिलाकर अब हिंदुत्व की आड़ में नई-नई दुकानें रोजाना खुल रही हैं। जनता को तय करना है कि वो मूर्ख बनती रहेगी या फिर इन ठग बाबाओं व मक्कार नेताओं के चंगुल में ही रहना पसंद करेगी।

लाला रामदेव की फरीदाबाद-गुड़गांव की जमीनों में दिलचस्पी बढ़ी

क्या आपको पता है ठग गुरु लाला रामदेव ने फरीदाबाद व गुड़गांव में बड़े पैमाने पर नामी-बेनामी जमीनें खरीदी हैं...वन विभाग के सूत्रों ने बताया कि लाला ने अरावली में करीब 200 एकड़ जमीन खरीदी है। करीब एक हजार एकड़ जमीन खरीदने के लिए विभिन्न डीलरों से बात चल रही है। एक सरकारी अफसर ने पुष्टि की है कि दिव्य योग मंदिर ट्रस्ट के नाम पर 12 एकड़ जमीन खरीदी गई है। एक बड़े प्रॉपर्टी डीलर ने बताया कि रामदेव के विभिन्न कंपनियों व ट्रस्ट के नाम पर कुछ और जमीन खरीदी गई है। लेकिन यह साफ नहीं है कि इस जमीन का इस्तेमाल क्या होगा। फरीदाबाद के कोट गांव में भी रामदेव के ट्रस्ट ने बड़े पैमाने पर जमीनें खरीदी हैं। सूचना है कि एक हजार एकड़ जमीन जो कोट गांव की है और अरावली वन क्षेत्र में आती है, उसे रामदेव के ट्रस्ट के लिए खरीदी गई है। पिछले दिनों गुड़गांव में हुए हैपनिंग हरियाणा इवेंट में रामदेव ने मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के सामने घोषणा की थी कि वह इस इलाके में पांच हजार करोड़ रुपये खर्च करके एक योग यूनिवर्सिटी और अंतरराष्ट्रीय हेल्थ सेंटर खोलना चाहते हैं। रामदेव को उस समय मुख्यमंत्री खट्टर ने पूरा आश्वासन दिया था कि रामदेव की पूरी मदद सरकार करेगी। वैसे भी सरकार अपने ब्रैंड एंबेस्डर की मदद नहीं करेगी तो किसकी करेगी...

आपको बता दें कि कोट गांव में जमीन की रजिस्ट्री पर रोक लगी हुई है। सवाल ये उठता है कि रामदेव के पास या तो यहां पहले से खरीदी गई जमीन मौजूद है या फिर सरकार का इशारा है कि आप तैयारी करो, हम रजिस्ट्री खोल देंगे। कहा जा रहा है कि इस सारे धंधे में कुछ बिल्डर भी रामदेव के साथ हैं। वन विभाग के कुछ ईमानदार अधिकारी हालात पर नजर रखे हुए हैं लेकिन उनका कहना है कि वे एक सीमा तक ही सरकार को ऐसा न करने की सलाह दे सकते हैं, लेकिन सरकारें ज्यादातर फैसला राजनीतिक ही करती हैं तो ऐसे में उनके पास कुछ बचा नहीं है।

मालूम हो कि हरियाणा वन विभाग के कानून के मुताबिक अरावली की जमीन को सिर्फ वन या कृषि के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है लेकिन जल्द ही पूरी अरावली रामदेव के धंधों से जगमगाने वाली है।

पिछला इतिहास...

फरीदाबाद-गुड़गांव के बीच अरावली की बेशकीमती जमीन पर बाबाओं की नजरें आज से नहीं पिछले 30-40 साल से लगी हुई हैं। पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को योग सिखाने वाले धीरेंद्र ब्रह्मचारी ने भी अरावली की जमीन पर डिज्नीलैंड बनाने का सपना देखा था। उस वक्त भजनलाल हरियाणा के सीएम थे। उन्होंने फैसला भी ले लिया और नोटिफिकेशन जारी हो गया। उस समय मुंबई से प्रकाशित होने वाले ब्लिट्ज साप्ताहिक अखबार ने इस पूरी डील की खबर छाप दी। इस खबर को बाकी मीडिया ने भी बाद में उठाया। अरावली के गांवों में रहने वाले किसानों ने इसके खिलाफ आंदोलन छेड़ दिया। मजबूर होकर भजनलाल ने नोटिफिकेशन वापस लिया और ब्रह्मचारी को भागना पड़ा।

इसके बाद यही रामदेव बाल्टी बाबा के नाम से इस इलाके में घूमने लगे। बाल्टी बाबा यानी रामदेव भजनलाल के नजदीक पहुंचे और अरावली में जमीन की इच्छा जाहिर की। भजनलाल ने आश्वासन दिया लेकिन उस समय भजनलाल को कुछ सीनियर आईएएस अफसरों ने सलाह दी कि बाल्टी बाबा के रंग-ढंग अच्छे नहीं हैं आप उनसे पीछा छुड़ा लो, चुनाव नजदीक है। गुड़गांव-फरीदाबाद के किसान फिर बवाल कर सकते हैं। इसके बाद बाल्टी बाबा का भजनलाल के दरबार में आना-जाना बंद हो गया। इसके बाद बाल्टी बाबा भी हरियाणा के सीन से गायब हो गए। फिर उन्होंने योग विद्या और अच्छे ढंग से सीखी। उसका सरलीकरण किया और रामदेव के रूप मे वापसी की। लेकिन इस बार उन्होंने बीजेपी के नेताओं को पटाकर अपना खेल शुरू किया और कामयाब रहे। हरियाणा के तमाम मंत्री उनकी चिलम भर रहे हैं और एक मंत्री तो रामदेव के सहारे ही आए दिन खट्टर को चुनौती देता है और मुख्यमंत्री बनने के सपने देख रहा है। यानी बाबा हरियाणा सरकार में अपनी पूरी राजनीति कर रहा है। वक्त का इंतजार कीजिए...कई गुल खिलाएगा ये बाबा।

मोदी के 15 लाख के झूठे वादे पर नाना के असली 15 हजार भारी

बेहद साधारण से चेहरे वाले असाधारण इंसान ...नाना पाटेकर ....जिनका नाम लेते ही उनके चेहरे से पहले जो डायलाग याद आता है...ये हिन्दू का खून ये मुसलमान का खून just kidding अभिनय के क्षेत्र में वो किसी महानायक से कम नही ...लेकिन अभी जिस नेक कार्य से वो चर्चा में आये है वो अद्भुत और अविश्वसनीय है ... ।.. उन्होंने अपने अकेले के दम पर 5000 से अधिक ऐसे किसान परिवारों को अपने घर से 15000 रूपये आर्थिक सहायता की जिनके किसान मुखिया ने सूखे से व्याकुल हो आत्महत्या कर ली . ।...आप में से शायद कुछ लोगो ने न्यूज़ में देखा हो..नाना जब मृतक किसान परिवारों को चेक वितरण कर रहे थे ,.कुछ युवा लडको का समूह मोबाइल पे उनकी चेक देती फोटोज लेने लगा..। नाना उन्हें खदेड़ते हुए बिलकुल नाना वाले अंदाज़ में बिफर पड़े .....यहाँ फंक्शन हो रहा है क्या..... ? ?.....ये 5000 लोगो की मय्यत है और तुम जैसे लोग फोटोज ले रहे हो . ।. मुझे उनकी तिरंगा वाली सरफिरा, अक्खड़ , सनकी अदा देख हंसी छुट गयी...लेकिन अगले पांच मिनट में स्टेज पर जो हुआ हर देखने वाले की आँखे नम हो गयी ।..बेहद कम उम्र की 19 या 20 साल की नाजुक , गरीब किसान की ग्रामीण विधवा कापते हाथो से चेक लेते हुए खुद को सम्हाल न पायी..। चेक पकड़ते ही स्टेज पे रोते हुए कांपने लगी ।...पितातुल्य हिम्मत बंधाते नाना खुद भी भावुक हो गए... । हज़ारो किसान परिवार जिन्होंने सूखे से अपने घर के मुखिया को खोया और भुखमरी के कगार पर खड़े है ।...एक किसान की आपबीती से दिल दहल गया ..जो 30 किलो मीटर वापस अपने गाव पैदल जाने वाला था जिसके पास बस किराए के 30 रुपए न थे... ।..नाना ने अपनी जमा पूंजी से 15000 -15000 रुपये का चेक प्रत्येक परिवार को स्टेज पर ना बुला उस सभा गृह में उन 5000 सीटों पर जा दोनों हाथो से झुक कर नम आँखों से विधवाओ .,बच्चो ..पिता और उन माताओं को वितरित किये। अपने जीवन की सम्पूर्ण जमा पूंजी का दान कर नाना को समझ आया के समस्या उनके अनुमान और आर्थिक हैसियत से ज्यादा विकराल है ।. एकला चलो रे से शुरू हुआ ये सफर धीरे धीरे ...नाम...संस्था के रूप में सामने आया है । यहाँ एक नाम अक्षय कुमार का जोड़ना जरुरी है जो तुरंत एक करोड़ दान करने वाले पहले फिल्मी कलाकार है. । नाम नाना द्वारा शुरू की गयी सूखा पीड़ित किसानो के लिए आरम्भ की हुई गैर सरकारी संस्था है। मैंने अभी अभी न्यूज़ में नाना को जमीन पर बैठ बेहद साधारण से अपने घर से अपील करते देखा...कोई किसान आत्महत्या ना करे मेरे घर की आखरी पाई भी दान कर दूंगा , मेरी आंखरी सांस तक मैं किसानो के साथ हूँ .। आप मेरे पास आ जाओ । मैं आपकी सहायता कर कोई अहसान नही कर रहा। ये मेरा देश है और आप किसानो का देश पे बहुत क़र्ज़ है। मैं तो कुछ अंश लौटाने की कोशिश कर रहा हूँ। देशवासियों को भी ग्लास में आधा पानी पीने के बाद आधा फेकते समय जरुर सोचना चाहिए की इस आधे ग्लास पानी के लिए आपके ही देश के एक हिस्से में लोग जान दे और जान ले रहे है। लोग एक मटकी पानी के लिए 10 किलोमीटर की दूरी तय कर घन्टो की लाइन लगा रहे है । स्थिति की भयानकता को समझिये और सम्हलिये। सिर्फ पिछले 6 माह में 5000 किसानो ने आत्महत्या कर ली। ये सूखा ,अकाल अंतिम सेफ्टी सायरन है ।ग्लैमर की दुनिया को छोड़, सुदूर बंजर खेतो में लाचारी का मातम मनाते परिवारों में, आशा का पानी ले पहुँचे इस हरफनमौला फ़कीर महानायक की सुविधाहीन भटकन को दिल से सलाम...

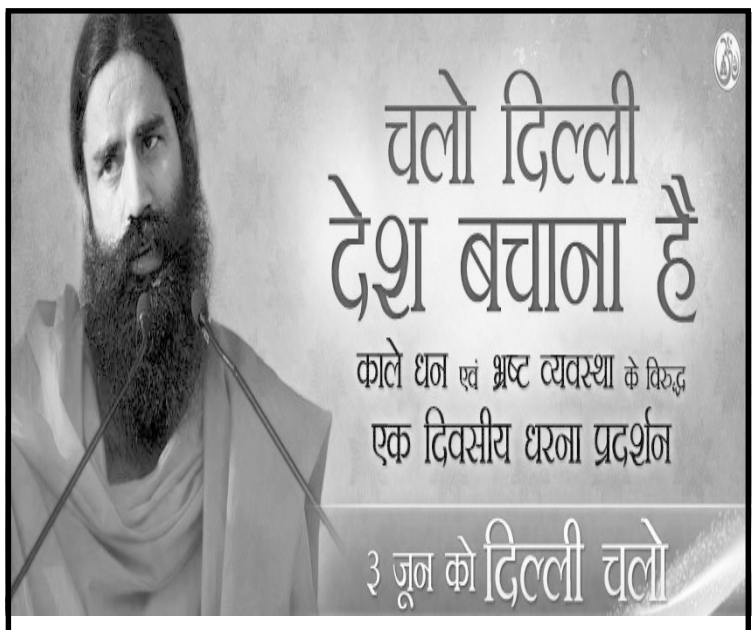

काला धन के मुद्दे पर आज-कल जैसे ही रामदेव का मुंह खुलता है दो बातों का योग निश्चित है । मोदी सरकार काला धन को सफ़ेद करने की कांग्रेसी लांड्री का शटर पुनः झाड़-पोंछ कर खोलने में लग जाती है । साथ ही शुरू हो जाती है, भाजपा शासित किसी राज्य में रामदेव को हर्बल पार्क के नाम पर मुफ्त में हजारों एकड़ भूमि आबंटन की हिल-जुल भी ।